उन्नति पत्रिका

(बारहवाँ संस्करण)

वर्ष-2024

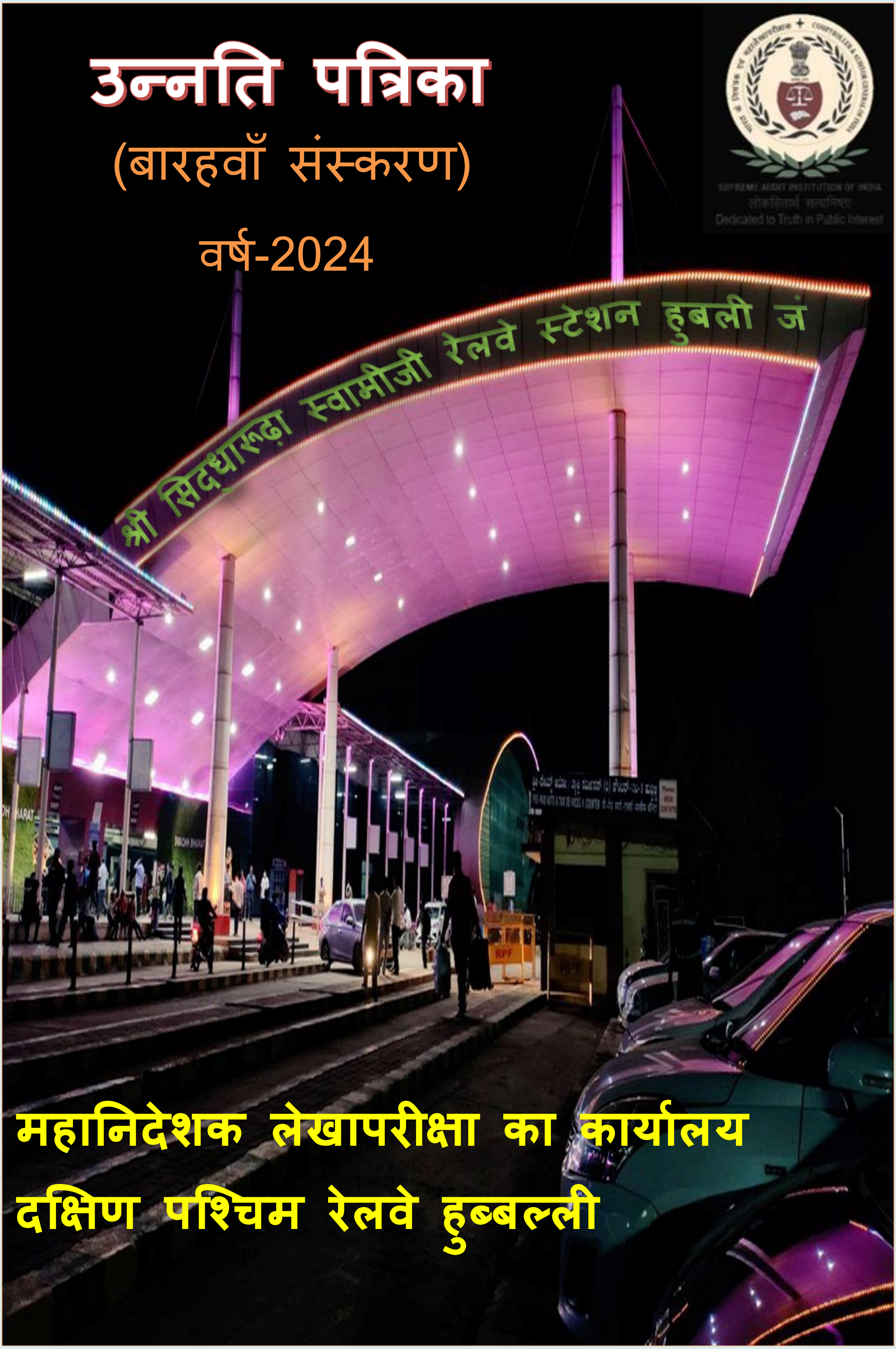

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली

“उन्नति”

(बारहवाँ संस्करण) वर्ष-2024

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली

संरक्षक	:	श्री **आर. नरेश, महानिदेशक लेखापरीक्षा**
उप संरक्षक	:	श्री एम. दिनेश नाईका, निदेशक लेखापरीक्षा
वरिष्ठ संपादक	:	श्री डी. एम. महांतेश, व. लेखापरीक्षा अधिकारी श्री एस. श्रीकांत, व. लेखापरीक्षा अधिकारी
सह संपादन एवं छायाचित्र	:	श्री राजेश प्रियदर्शी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तकनीकी सहयोग	:	श्री राजेश प्रियदर्शी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्रीमती बी. ब्रिजिता, कनिष्ठ अनुवादक

शुभकामना संदेश

वर्ष 2024 में 'उन्नति' पत्रिका के बारहवां संस्करण को प्रकाशित करने में मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस कार्यालय ने राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को सुचारु रुप से प्राप्त करने का प्रयास किया है। इस कार्यालय के अधिकारीयों एवं कर्मचारियों ने हिन्दी कार्यान्वयन को महत्व दिया एवं अपने लेखों को प्रस्तुत किया और हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लिया। आशा है कि इस पत्रिका के विमोचन से समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी प्रेरित होंगे और 'उन्नति' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा।

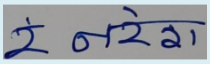

(आर. नरेश)

महानिदेशक लेखापरीक्षा

निदेशक लेखापरीक्षा की कलम से।।।।।।।।।।।।

'उन्नति' पत्रिका का विमोचन हिन्दी भाषा को राष्ट्रव्यापी बनाने की ओर एक सराहनीय कदम है। हिन्दी भाषा एक ऐसा माध्यम है, जो पूरे देश को एक कड़ी में पिरो सकती है। हमारे कार्यालय के हर एक कर्मचारी एवं अधिकारी, जिन्होंने अपनी मेहनत और लगन से इस पत्रिका को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है, उन सबको मैं बधाई देता हूँ। क्योंकि यह पत्रिका एक सामूहिक प्रयास का ही परिणाम है।

मैं आशा करता हूँ, कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'उन्नति' पत्रिका का बारहवां संस्करण सफल हो।

(एम. दिनेश नाईका)

निदेशक लेखापरीक्षा

संपादकीय ||||||||

यह हमारे लिए बहुत ही हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'उन्नति' का बारहवां संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इससे हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने लेखों द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने का मौका मिलता है। इस पत्रिका को सफल बनाने में हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अहम भूमिका रही है। अतः उन सबको मैं बहुत बधाई देता हूँ और 'उन्नति' पत्रिका के बारहवां संस्करण की सफलता की कामना करता हूँ।

(डी. एम. महांतेश)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

<u>नोट</u> - पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबन्धित लेखकों के हैं। संपादक मण्डल एवं कार्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के संबंध में किसी भी विवाद का उत्तरदायित्व भी रचनाकारों का ही होगा।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1.	महिला सुरक्षा	हिमांशु तोमर	7
2.	पेरिस ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन	अभिनव कुमार गुप्ता	9
3.	सतत् प्रयास का महत्व	विपिन कुमार	10
4.	'आनंदमठ' - पुस्तक समीक्षा	शुभम गौड़	12
5.	हुबली में गणेश चतुर्थी	राकेश कुमार	14
6.	हुबली की सांस्कृतिक जलक	राजेश प्रियदर्शी	15
7.	मैथिलीशरण गुप्त जी की कविता- "आर्य-हम कौन थे"	शैलेन्द्र प्रजापति	17
8.	हाथी और कुत्ता	टी.वेंकट रथनैय्या	19
9.	बिना मुकाम के काम कैसा	एम. मनु	21
10.	मुखियाजी के ग्रेजुएट बहु	राम राघव	22
11.	मोतियों का शहर	बी.ब्रिजिता	25
12.	"माँ, हाँ मैं एक लड़की हूँ"	अनामिका पटेल	27
13.	हुब्बल्ली श्री सिद्धरूढ़ा मठ (आउटसोर्स)	प्रिया.बी.एन	28
14.	आगामी	पम्पा बिस्वास	30
15.	पुस्तकें: समय की सीमाओं से परे एक यात्रा	राजेश कुमार	32
16.	डिजिटल परिवर्तन (आउटसोर्स)	राजकिरण पी	35

महिला सुरक्षा

महिलाओं की सुरक्षा आज के समाज में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दा है। हमारे देश की संस्कृति और परंपराएँ महिलाओं को अत्यधिक सम्मान देने की बात करती हैं, लेकिन वास्तविकता में उन्हें कई तरह की चुनौतियों और खतरों का सामना करना पड़ता है। महिलाओं की सुरक्षा केवल कानूनी और प्रशासनिक उपायों का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक सोच और व्यक्तिगत दृष्टिकोण का भी हिस्सा है।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा और इसके प्रभाव

महिलाओं के खिलाफ हिंसा एक वैश्विक समस्या है, जो न केवल उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि उनके सामाजिक और आर्थिक विकास को भी बाधित करती है। घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, दहेज हत्या, मानव तस्करी जैसी समस्याएँ महिलाओं की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती हैं। इसके अलावा, कार्यस्थल पर भी महिलाओं को उत्पीड़न और भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जो उनके आत्म-सम्मान और करियर को प्रभावित करता है।

कानून और प्रशासनिक उपाय

महिलाओं की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा कई कानूनी और प्रशासनिक उपाय किए गए हैं। घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम 2005, यौन उत्पीड़न (रोकथाम, प्रतिबंध और निवारण) अधिनियम 2013, और दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 जैसे कानून महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करते हैं और उन्हें सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास करते हैं। इसके अतिरिक्त, सरकार ने हेल्पलाइन, महिला थाना, और फास्ट ट्रैक कोर्ट जैसी व्यवस्थाएँ भी स्थापित की हैं, ताकि महिलाओं को त्वरित न्याय मिल सके।

शिक्षा और जागरूकता

महिलाओं की सुरक्षा के लिए शिक्षा और जागरूकता का बहुत बड़ा महत्व है। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जानकारी दी जा सकती है, जिससे वे अपने साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठा सकें। समाज में जागरूकता अभियान चलाकर महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने और उनके प्रति सम्मान बढ़ाने का प्रयास किया

जा सकता है। इसके साथ ही, समाज के सभी वर्गों में यह समझ विकसित की जानी चाहिए कि महिलाओं के साथ भेदभाव और हिंसा अस्वीकार्य हैं।

सामाजिक दृष्टिकोण और भूमिका

महिलाओं की सुरक्षा के लिए सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव लाना अत्यंत आवश्यक है। बच्चों को बचपन से ही महिलाओं के प्रति सम्मान और समानता का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए। समाज में पुरुषों की भूमिका को भी समझना होगा, जो महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं। महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता और समानता की भावना विकसित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

निष्कर्ष

महिलाओं की सुरक्षा केवल एक व्यक्तिगत या सरकारी जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज का कर्तव्य है। हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जहां महिलाएं स्वतंत्रता, सम्मान और सुरक्षा के साथ जी सकें। इसके लिए कानून, प्रशासन, शिक्षा, और सामाजिक दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव आवश्यक हैं। जब तक समाज में हर व्यक्ति महिलाओं की सुरक्षा के प्रति संवेदनशील नहीं होगा, तब तक महिलाओं के अधिकारों की रक्षा संभव नहीं है। इस दिशा में हर नागरिक का योगदान महत्वपूर्ण है।

हिमांशु तोमर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पेरिस ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन

11 अगस्त 2024 को ओलंपिक खेलो के तैंतीसवाँ संस्करण का समापन फ्रांस की राजधानी पेरिस में हुआ | इस बार के खेल में चीन और अमेरिका के बीच प्रतिस्पर्धा रही पदक तालिका में नंबर 1 स्थान प्राप्त करने की। दोनों देशों ने 40-40 स्वर्ण पदक जीते लेकिन कुल पदक संख्या के आधार पर अमेरिका ने पहला स्थान हासिल किया|

भारत ने 117 खिलाड़ियों का दल इन खेलों में भेजा था। भारत का प्रदर्शन टोक्यो ओलंपिक 2020 की तुलना में औसत ही रहा | 1 रजत पदक और 5 कांस्य पदक के साथ भारत ने पदक तालिका में 71वां स्थान प्राप्त किया | टोक्यो ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीत

कर इतिहास रचने वाले नीरज चोपड़ा इस बार वो कारनामा दोबारा करने से चूक गए और उन्हें रजत पदक से ही संतोष करना पड़ा | 22 साल की मनु भाकर इस ओलंपिक में भारत के लिए सबसे चमकता सितारा बनीं | शूटिंग प्रतियोगिता में 2 पदक जीतने के बाद मनु एक संस्करण में 2 ओलंपिक पदक जीतने वाली भारत की पहली खिलाड़ी बन गईं। स्वप्निल कुशले और सरबजोत सिंह ने भी भारत के लिए शूटिंग में कांस्य पदक जीता | एक तरफ अधिक वजन के कारण विनेश फोगाट के अयोग्य घोषित होने से देश को निराशा हुई, दूसरी तरफ अमन सहरावत ने पुरुषों की फ्रीस्टाइल 57 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक जीतकर कुछ राहत दी। हॉकी की तरफ से भी भारत को अच्छी खबर मिली, भारत ने लगातार दूसरे ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर साबित कर दिया कि भारतीय हॉकी अपने पुराने गौरव को हासिल करने की राह पर है | कई प्रमुख भारतीय खिलाड़ी जैसे पी. वी. सिंधु, निखत जरीन और मीरा बाई चानू को निराशा का सामना करना पड़ा | हमें उम्मीद है कि देश खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ता रहेगा और खिलाड़ियों को सरकार से सहयोग मिलता रहेगा जिससे आगामी ओलंपिक खेलों में और भी पदक लाने में मदद मिलेगी।

अभिनव कुमार गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सतत् प्रयास का महत्व

व्यवहार पर किए जा रहे किसी शोध में एक प्रयोग किया गया। एक बड़े शीशे के टैंक में बहुत सारी छोटी-छोटी मछलियाँ छोड़ी गयीं और फिर ढक्कन बंद कर दिया। अब थोड़ी देर बाद एक बड़ी शार्क मछली को भी टैंक में छोड़ा गया लेकिन शार्क और छोटी मछलियों के बीच में एक काँच की दीवार बनायी गयी ताकि वो एक दूसरे से दूर रहें।जैसा कि शार्क मछली की खासियत होती है कि वो छोटी छोटी मछलियों को खा जाती है। अब जैसे ही शार्क को छोटी मछलियाँ दिखाई दीं वो झपट कर उनकी ओर बढ़ी।जैसे ही शार्क मछलियों की ओर गयी, वो कांच की दीवार से टकरा गयी और मछलियों तक नहीं पहुँच पायी। शार्क को कुछ समझ नहीं आया वो फिर से छोटी मछलियों की ओर दौड़ी लेकिन इस बार भी वो विफल रही। शार्क को बहुत गुस्सा आया अबकी बार वो पूरी ताकत से छोटी मछलियों पे झपटी लेकिन फिर से कांच की दीवार बाधा बन गयी।

कुछ घंटों तक यही क्रम चलता रहा, शार्क बार बार मछलियों पर हमला करती और हर बार विफल हो जाती।कुछ देर बाद शार्क को लगा कि वह मछलियों को नहीं खा सकती, यही सोचकर शार्क ने हमला करना बंद कर दिया वो थक कर आराम से पानी में तैरने लगी। अब कुछ देर बाद वैज्ञानिकोंने उस कांच की दीवार को शार्क और मछलियों के बीच से हटा दिया उन्हें उम्मीद थी कि शार्क अब सारी मछलियों को खा जाएगी।

लेकिन ये क्या, शार्क ने हमला नहीं किया ऐसा लगा जैसे उसने मान लिया हो कि अब वो छोटी मछलियों को नहीं खा पायेगी। काफी देर गुजरने के बाद भी शार्क खुले टैंक में भी मछलियों पर हमला नहीं कर रही थी।

इसे कहते हैं – सोच। कहीं आप भी शार्क तो नहीं? हाँ! हममें से काफी लोग उस शार्क की तरह ही हैं जो किसी कांच जैसी दीवार की वजह से ये मान बैठे हैं कि हमकुछ नहीं कर सकते। और हममें से काफी लोग तो ऐसे जरूर होंगे जो शार्क की तरह कोशिश करना भी छोड़ चुके होंगे।लेकिन सोचिये जब टैंक से दिवार हटा दी गयी फिर भी शार्क ने हमला नहीं किया क्यूंकि वो हार मान चुकी थी, कहीं आपने भी तो हार नहीं मान ली? कोई परेशानी या अवरोध हमेशा नहीं रहता, क्या पता आपकी काँच की दीवार भी हट चुकी हो लेकिन आप अपनी सोच की वजह से प्रयास ही नहीं कर रहे।

सीखः-आप भी कहीं ना कहीं ये मान बैठे हैं कि मैं नहीं कर सकता। पर मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि एक दिन आपकी दीवार भी जरूर हटेगी या हट चुकी होगी। जरुरत है तो सिर्फ आपके पुनः प्रयास की। तो सोचिये मत, प्रयास करते रहिये आप जरूर कामयाब होंगे…

विपिन कुमार,

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आनंदमठ’ - पुस्तक समीक्षा

‘आनंदमठ’ बांग्ला भाषा का एक उपन्यास है जिसकी रचना बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने सन् 1882 में की थी। आनंदमठ के हवाले से भारतीय स्वतंत्रता के जयघोष को समझना भी आज के समय में प्रासंगिक होने के साथ-साथ अनुकरणीय भी है। यह भी अचरज की बात है कि पहली बार वर्ष 1882 में प्रकाशित इस उपन्यास को 140 वर्ष बाद पढ़ना सांस्कृतिक व ऐतिहासिक रूप से रोमांचित अनुभव कराता है। इतिहास के पृष्ठों को खंगालते हुए यह देखना महत्वपूर्ण है कि इस कृति के रचनाकार बंकिमचंद्र चटर्जी ब्रिटिश हुकूमत में डिप्टी कलेक्टर के पद पर तैनात रहे थे। उन्होंने ‘आनंदमठ’ को पहले अपनी साहित्यिक पत्रिका ‘बंग दर्शन’ में किश्तों में छापा था, जो बाद में 1882-83 में प्रकाशित हुआ।

यह उपन्यास अपने प्रकाशन के ठीक एक सदी पूर्व हुए बंगाल के अकाल की पृष्ठभूमि पर लिखा गया था, जिसमें कथानक को गति देने के लिए समानांतर रूप से बाद में हुए संन्यासी विद्रोह की कथा भी शामिल है। एक हद तक यह उपन्यास ऐतिहासिक है, मगर उसके गठन में रचा गया कथानक काल्पनिक पात्रों पर आधारित है। यह भी एक दिलचस्प पहलू है कि इस उपन्यास को साहित्यिक उपलब्धि से अधिक राजनीतिक सफलता हासिल हुई और धीरे-धीरे यह बंगाल में राष्ट्रवाद की पुकार के साथ स्वाधीनता के आंदोलन का प्रेरणा ग्रंथ बन गया। कोई पुस्तक अपने होने को इस अर्थ में भी चरितार्थ करती है कि उसके विचार और उद्देश्य, एक बड़े समाज का सच बनकर सामान्य जनता के लिए प्रेरणा की चीज बन जाए।

संन्यासियों के विद्रोह के स्वरों में रचे गए इस उपन्यास का मूल कथानक स्वाधीनता की पुकार को गाढ़ा करता है। उपन्यास के चरित्र- महेंद्र, कल्याणी, सत्यानंद ब्रह्मचारी और उनके शिष्य भावानंद, जीवानंद, ज्ञानानंद और धीरेंद्र गोस्वामी के माध्यम से एक ऐसा उदात्त संदेश रचा गया है, जो प्रार्थना की तरह नहीं, बल्कि सहस्रों कंठों के घोष से अंधेरे के विषाद को चीरता है। उपन्यास में यह वर्णन आता है- ‘उस अंधेरी रात में पत्तों का मर्मर शब्द, अस्त्रों की झंकार, कंठों का अस्फुट स्वर, बीच-बीच में तुमुल स्वर में हरिनाम का जयघोष...’

‘आनंदमठ’ को पढ़ते हुए राष्ट्रभक्त संन्यासियों के बहाने उस भारतीय पुनर्जागरण के आने की शुरुआती आहट भी मिलती है, जो बाद में महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक बड़े विचार में

बदलती है। वह दौर, स्वतंत्रता पाने को मचलते नौजवान, विदेशी वस्त्रों का परित्याग, प्रभातफेरियां, जुलूस, ब्रितानी हुकूमत के खिलाफ फांसी पर चढ़ जाने की गर्मजोशी- इन सभी की आधारशिला रखता हुआ 'आनंदमठ' एक सांस्कृतिक दस्तावेज बनता है, जो साहित्य से बहुत आगे की चीज है। सत्य, शांति, करुणा और कल्याण के स्वर से भीगा हुआ यह कथानक पूरी तरह ओजस्विता का वरण करता है, जो बंगाल की पृष्ठभूमि में कुछ अधिक तीव्रता के साथ उजागर होता है।

'आनंदमठ' को ही इस बात की प्रतिष्ठा मिली हुई है कि इस उपन्यास में प्रयुक्त गीत 'वंदे मातरम्' बाद में अंग्रेजों के खिलाफ समूचे भारतवर्ष का प्रेरणा गीत बन गया, जिसे बाद में राष्ट्रगीत होने की मान्यता मिली। उपन्यास में बागी संन्यासी, जो वंदे मातरम् गीत गाते हैं, वह बंगाल में स्वाधीनता के मतवालों का गीत बनते हुए जैसे स्वाधीनता के लिए युवाओं के मन में युद्धघोष का प्रतीक बन गया। किसी गीत या कृति के लिए यह असाधारण बात है, जो समाज को राह दिखाने के लिए मशाल बन जाए। एक ऐसी किताब, जो कथानक के अनुसार भले ही महेंद्र और कल्याणी के बहाने हिन्दू सनातन धर्म की रक्षा को लक्ष्य करती है... मगर धीरे-धीरे वह पूरे देश को ब्रिटिशों से मुक्ति दिलाने में एक साहसी उपकरण बनकर हर तरफ पसर जाती है।

इस अर्थ में 'आनंदमठ' ऐसी महान कृति के रूप में याद की जाती रहेगी, जिसने स्वाधीनता आंदोलन में अपनी उपस्थिति से चिंगारी का काम किया। किताब की प्रासंगिकता अतुलनीय है और वह शताब्दियों के आर-पार अदम्य उत्साह के साथ दमक रही है। 'आनंदमठ' में निहित सत्य के मार्ग पर जाकर स्वाधीनता और राष्ट्रीयता की चेतना इसे महान कृति का दर्जा देती है।

शुभम गौड़

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हुबली में गणेश चतुर्थी

गणेश चतुर्थी हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार भारत के विभिन्न भागों में मनाया जाता है किन्तु महाराष्ट्र व कर्नाटका में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। पुराणों के अनुसार इसी दिन भगवान श्री गणेश जी का जन्म हुआ था।गणेश चतुर्थी पर हिन्दू भगवान गणेशजी की पूजा की जाती है। कई प्रमुख जगहों पर भगवान गणेश की बड़ी प्रतिमा स्थापित की जाती है। इस प्रतिमा का नौ दिनों तक पूजन किया जाता है। बड़ी संख्या में आस पास के लोग दर्शन करने पहुँचते है। नौ दिन बाद गानों और बाजों के साथ गणेश प्रतिमा को किसी तालाब, महासागर इत्यादि जल में विसर्जित किया जाता है।

मान्यता के अनुसार, शिवपुराण के अन्तर्गत रुद्रसंहिताके चतुर्थ (कुमार) खण्ड में यह वर्णन है कि माता पार्वती ने स्नान करने से पूर्व अपनी मैल से एक बालक को उत्पन्न करके उसे अपना द्वार पाल बना दिया। शिवजी ने जब प्रवेश करना चाहा तब बालक ने उन्हें रोक दिया। इस पर शिवगणोंने बालक से भयंकर युद्ध किया परंतु संग्राम में उसे कोई पराजित नहीं कर सका। अन्ततोगत्वा भगवान शंकर ने क्रोधित होकर अपने त्रिशूल से उस बालक का सिर काट दिया। उसके बाद, शिवजी के निर्देश पर विष्णुजी उत्तर दिशा में सबसे पहले मिले जीव (हाथी) का सिर काटकर ले आए। मृत्युंजय रुद्र ने गज के उस मस्तक को बालक के धड पर रखकर उसे पुनर्जीवित कर दिया। माता पार्वती ने हर्षातिरेक से उस गज मुख बालक को अपने हृदय से लगा लिया और देवताओं में अग्रणी होने का आशीर्वाद दिया। ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने उस बालक को सर्वाध्यक्ष घोषित करके अग्रपूज्यहोने का वरदान दिया। तब से, उस दिन को गणेश चतुर्थी के रूप में मनाया जाता है|

हुबली में बहुत ही भव्य तरीके से गणेश उत्सव मनाया जाता है|यहाँ गणेश जी की बड़ी मूर्ति को हुबली का राजा के नाम से जाना जाता है|गणेश जी की मूर्ति अपने बड़े आकार और सुंदरता के कारण लोगों को आकर्षित करती है|लगभग 10 से 15 दिनों तक हुबली के विभिन्न भागों का वातावरण अत्यंत प्रसन्न एवं ऊर्जावान रहता है|पूरे शहर में अलग-अलग थीम पर अलग-अलग तरह के पंडाल बनाए जाते हैं, जिसमें घूमने का मजा ज्यादा है|तमाम सुरक्षा इंतजामों के साथ यह बहुत शांतिपूर्ण ढंग से मनाया जाता है

इस अवधि के दौरान, व्यापक आर्थिक गतिविधियाँ होती हैं, जो क्षेत्र के रोजगार सृजन और विकास में योगदान करती हैं|

राकेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हुबली की सांस्कृतिक झलक

हुबली में अनुभव करने के लिए सर्वोत्तम सांस्कृतिक उत्सव

हुबली दक्षिण भारत में स्थित कर्नाटक का एक प्रमुख शहर है। धारवाड़ इसका प्रशासनिक मुख्यालय है, और हुबली उत्तरी कर्नाटक का वाणिज्यिक केंद्र और विकासशील औद्योगिक, ऑटोमोबाइल और शैक्षिक केंद्र है। हुबली का इतिहास चालुक्य काल से जुड़ा है।

कर्नाटक उन राज्यों में से एक है जहाँ आप एक ही स्थान पर कला, इतिहास और त्यौहारों का सबसे बेहतरीन आनंद ले सकते हैं। नृत्य उत्सवों से लेकर पूजा और देशभक्ति समारोहों तक की विभिन्न गतिविधियाँ खोजी और आनंदित की जा सकती हैं। यदि आप हुबली में हैं, तो राज्य के कुछ सबसे प्रसिद्ध त्यौहारों में भाग लेने का प्रयास करें। यहाँ आयोजित होने वाले कई त्यौहार कला, धर्म या ऋतु परिवर्तन को समर्पित होते हैं।

हुबली में इन शीर्ष सांस्कृतिक उत्सव

जब आप हुबली पहुंचेंगे, तो आपका स्वागत प्रदर्शनियों, प्रदर्शनों और स्वादिष्ट मिठाइयों से होगा। इसलिए, बाहर निकलें और अपने दोस्तों और प्रियजनों के साथ क्वालिटी टाइम बिताते हुए राज्य के कुछ सबसे लोकप्रिय त्योहारों का अनुभव करें। यहाँ हुबली में मनाए जाने वाले त्योहारों की एक सूची दी गई है जिन्हें आपको मिस नहीं करना चाहिए।

1. पट्टाडकल नृत्य महोत्सव

हुबली के नृत्य उत्सवों में से एक पट्टाडकल हर साल बहुत से आगंतुकों को आकर्षित करता है। यह शहर के मंदिरों में आयोजित किया जाता है, जो 7वीं शताब्दी में बनाए गए थे और तब से इसके महत्व के कारण यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के रूप में नामित किए गए हैं। कला और नृत्य प्रेमियों को यह कार्यक्रम अवश्य देखना चाहिए।

2. उगादि

हिंदू कैलेंडर के अनुसार, यह त्यौहार, जिसे गुड़ी पड़वा के नाम से भी जाना जाता है, नए साल की शुरुआत का जश्न मनाता है। लोककथाओं के अनुसार, इसी दिन भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मांड का निर्माण शुरू किया था। हुबली में यह केंद्रीय त्यौहार बहुत उत्साह और बहुत सारी योजना और तैयारी के साथ मनाया जाता है। घरों और मंदिरों को सजाया जाता है, और मेहमानों के लिए एक विशेष रात्रिभोज तैयार किया जाता है। कई लोग कहते हैं कि यह किसी नई संपत्ति में निवेश करने या कोई नया व्यवसाय शुरू करने के लिए एक आदर्श दिन है।

3. राज्योत्सव

राज्योत्सव, जो जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है, राज्य की स्थापना का स्मरण करता है और त्योहारों की सूची में एक और प्रमुख घटना है। इस दिन, जिसे कर्नाटक के राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाया जाता है, सभी स्कूलों, संस्थानों और कार्यस्थलों में छुट्टी घोषित की जाती है ताकि उत्सव मनाया जा सके। पारंपरिक नृत्य किए जाते हैं, राज्य का झंडा हर जगह फहराया

जाता है, और उपस्थित सभी लोगों को मिठाइयाँ दी जाती हैं। हुबली में सभी धार्मिक समुदाय इसे यथासंभव पूरे उत्साह से मनाते हैं।

हुबली में घूमने लायक जगहें

हुबली में त्यौहारों का आनंद लेते हुए आपको कई जगहों पर जाना चाहिए। नीचे सूची देखें।

- **चंद्रमौलेश्वर मंदिर:** चालुक्यों के शासन के दौरान लगभग 900 साल पहले बनाया गया यह भव्य मंदिर देखने लायक है। चंद्रमौलेश्वर को समर्पित यह मंदिर काले ग्रेनाइट से बना है और इसमें शानदार मूर्तियां हैं जो संरचना की समग्र भव्यता को बढ़ाती हैं।
- **बनशंकरी मंदिर** : यह मंदिर 13वीं शताब्दी में पत्थर से बनाया गया था। यह चालुक्यों की एक और शानदार उपलब्धि है, जो अपनी वास्तुकला कौशल के लिए जाने जाते थे। यह राजसी सुंदरता, जो हिंदू भगवान शिव को समर्पित है, किसी ऐसी उत्कृष्ट कृति से कम नहीं है जिसे कहीं और खोजना मुश्किल है।
- **उन्कल झील:** यह प्रसिद्ध झील 200 एकड़ में फैली हुई है और स्वामी विवेकानंद के एक आश्चर्यजनक स्मारक पर केंद्रित है। उन्कल झील इस क्षेत्र का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह एक प्रसिद्ध पिकनिक स्थल है जो सुंदर हरे पेड़ों और पौधों से घिरा हुआ है, जो आने वालों के लिए एक आरामदायक माहौल बनाता है। किंवदंतियों के अनुसार, झील 110 साल पुरानी है।
- **सिद्धारूढ़ मठ:** ऐसा कहा जाता है कि श्री सिद्धारूढ़ स्वामी ने 1929 में यहीं *समाधि* ली थी और इस मठ की स्थापना उनके भक्तों ने की थी। सिद्धारूढ़ मठ भारत का एक प्रमुख मठ है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी जैसे लोकप्रिय नाम इस स्थान पर नियमित रूप से आते थे। यह स्थान हुबली-धारवाड़ क्षेत्र में सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है।

हुबली में चखने लायक व्यंजन

- **गिरमिट:** गिरमिट हुबली में चाय के समय का एक लोकप्रिय नाश्ता है। यह हल्का, कुरकुरा और स्वादिष्ट होता है। इसके अलावा, इसे बनाना बहुत आसान है। गिरमिट को मुरमुरे, मसालेदार सेव, कटे हुए प्याज, टमाटर, ताजा धनिया और हरी मिर्च को मिलाकर बनाया जा सकता है। आपको बस इतना ही शुरू करने की ज़रूरत है। इमली का पानी, गुड़ पाउडर और हल्दी पाउडर सभी को पकवान को खत्म करने के लिए मिलाया जाता है।
- **पेड़ा:** यह स्वादिष्ट व्यंजन हुबली में स्थानीय लोगों की पसंदीदा चीज़ है। इसके मुख्य घटक दूध, खोआ और चीनी हैं। यह अद्भुत मिठाई हुबली-धारवाड़ और उसके आस-पास की लगभग हर मिठाई की दुकान पर उपलब्ध है। धारवाड़ पेड़ा कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रों में पाया जा सकता है, लेकिन हुबली और धारवाड़ में परोसे जाने वाले पेड़े सबसे बेहतरीन हैं।

राजेश प्रियदर्शी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैथिलीशरण गुप्त जी की कविता- “आर्य-हम कौन थे”

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिल कर, यह समस्याएं सभी

भू लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहां
फैला मनोहर गिरि हिमालय, और गंगाजल कहां
संपूर्ण देशों से अधिक, किस देश का उत्कर्ष है
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है

यह पुण्य भूमि प्रसिद्घ है, इसके निवासी आर्य हैं
विद्या कला कौशल्य सबके, जो प्रथम आचार्य हैं
संतान उनकी आज यद्यपि, हम अधोगति में पड़े
पर चिन्ह उनकी उच्चता के, आज भी कुछ हैं खड़े

वे आर्य ही थे जो कभी, अपने लिये जीते न थे
वे स्वार्थ रत हो मोह की, मदिरा कभी पीते न थे
वे मंदिनी तल में, सुकृति के बीज बोते थे सदा
परदुःख देख दयालुता से, द्रवित होते थे सदा

संसार के उपकार हित, जब जन्म लेते थे सभी
निश्चेष्ट हो कर किस तरह से, बैठ सकते थे कभी
फैला यहीं से ज्ञान का, आलोक सब संसार में
जागी यहीं थी, जग रही जो ज्योति अब संसार में

वे मोह बंधन मुक्त थे, स्वच्छंद थे स्वाधीन थे
सम्पूर्ण सुख संयुक्त थे, वे शांति शिखरासीन थे
मन से, वचन से, कर्म से, वे प्रभु भजन में लीन थे
विख्यात ब्रह्मानंद नद के, वे मनोहर मीन थे

(संग्रहित)

शैलेन्द्र प्रजापति
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हाथी और कुत्ता

एक समय की बात है, एक शाही हाथी किसी राजा के तबेले मे रहता था । हाथी दिखने मे तो काफी आकर्षक, तन्दुरस्त लगता था । महल का शाही भोजन मिलने की वजह से हाथी काफी तन्दुरस्त था । उसीके ठीक बाजुमे एक कुत्ता रहता था जो दिखने काफी दुर्बल था, रोज खाना ना मिलने की वजह से । शाही हाथी को रोज खाने मे शाही मीठे चावल मिलते थे । चावल की खुश्बु कुत्ते को आकर्षित कर उसे हाथी के तबेले तक ले आती थी । हाथी जब खाना खाता था तब वह कुत्ता छुपकर् देखता था । उसी दौरान जब हाथी के मून्ह से कुछ चावल गीरते थे, तब वह कुत्ता वहा जाकर हाथी के मून्ह से गीरे हुए चावल खाता था । जब की हाथी को पता ही नही था की उनके साथे एक कुत्ता भी चावल खा रहा है । एसा रोज चलने लगा । हाथी के खाने के टाइम पर कुत्ता वहां पहूंच जाता था और हाथी के मूह से गीरे हुए चावल खाता था । धीरे धीरे शाही चावल खाकर वह कुत्ता तन्दुरस्त और बहोत ही आकर्षक दिखने लगा । हाथी को जब पता चला की कुत्ता चावल खा रहा है, तब दयालु हाथी उन्हे खाना खाने देता था । इस वजह से धीरे धीरे कुत्ते को भी हाथी का डर नहीं लगता था और हाथी को भी उस कुत्ते से कोइ समस्या नहीं होती थी । धीरे धीरे ये दोनो अच्छे दोस्त बन गये । दोनो साथ मे खाना खाते थे, खेलते थे, एकसाथ समय गुजारते थे । हाथी अपनी लम्बी सूंढ पर कुत्ते को बिठाकर आगे-पीछे, आसपास घूमाता था । वो दोनो एक दूसरे के सच्चे और पक्के दोस्त बन गये और कभी भी जुदा नहीं होना चाहते थे ।

फिर एक दिन किसी गांव से एक अंजान आदमी आया । जब वो हाथी के तबेले से गुजर रहा था तब उसने उस प्यारे और आकर्षक कुत्ते को हाथी के साथ खेलते हुए देखा । उसको वो कुत्ता बहोत पसन्द आ गया । उसने उस कुत्ते को महावत से खरीद लिया, हांलाकी वह कुत्ता उस महावत का था भी नहीं । वह अंजान आदमी उस कुत्ते को खरीदकर अपने गांव ले गया । अपने दोस्त के जाने की वजह से हाथी एकदम सा उदास हो गया, उसने खाना-पीना, नहांना सब छोड दिया । हाथीकी इस हालत को देखकर महावत ने जाकर राजा से शिकायत की । राजाने इस समस्या के बारे मे मंत्री से सलाह मश्वरा लिया । समजदार मंत्री को लगा की

जानवरो का भी इंसान जैसा है, उनमे भी इन्सान की तरह भावनाएं होती है । मंत्री हाथी के तबेले मे गये वहां जाकर देखा की हाथी काफी उदास था । उन्हे भी लगा की ये हाथी तो हंमेशा खुश रहने वाला प्राणी था, फिर क्या हुआ? उन्होने वहां चोकीदारो से पूछा तो उन लोगोने कहां की, "हाथी की एक कुत्ते के साथ बहोत ही अच्छी दोस्ती हो गइ थी ।

वो दोनो हंमेशा साथ मे रहते थे, साथ मे खाना खाते, खेलते, टहेलते । हाथी को अपने प्यारे दोस्त के चले जाने से बहोत ही दु:ख हुआ है । उनके दोस्त को कोइ गांव वाला अपने घर लेके गया है ।" ये सब जानने के बाद मंत्रीने वैद्य को बुलाया तब उन्होने भी बताया की हाथी को कोइ भी बिमारी नहीं है, बस वो उदास है । मंत्रीजी ये सारी खबर लेके राजा के पास गये और उन्होने बताया की, राजा आप निश्चिंत रहीए आपका हाथी एकदम स्वस्थ है, उन्हे कोइ बिमारी नहीं है, बस वो खाली उदास है अपने दोस्त (कुत्ते) के जाने

की वजह से । ये सुनकर राजाने कहां की, मित्रता जीवन का अमूल्य भाग है । और राजाने मंत्रीजी को ये भी कहां की, "मे अपने हाथी को खुश देखना चाहता हुं, एसा क्या करे की वो फिर से खुश हो जाए" । मंत्रीजी ने कहां की, हम हमारे राज्य मे एक एसी जाहेर खबर कर दे की जीस किसी ने भी हाथी के तबेले मे से कुत्ता लिया है वो वापिस कर जाए, अन्यथा उसे उनका दंड भरना पडेगा । दूसरे ही दिन वो अंजान आदमी जो कुत्ता ले गया था, वापिस उसे उस हाथी के तबेले मे छोड गया । हाथी को देख कुत्ता बडी तेज रफ्तार से हाथी की और दोडा और हाथी भी अपने दोस्त की तरफ दौडा । हाथी की आंखो मे अपने दोस्त के मिलने की खुशी साफ साफ दिखाइ दे रही थी । जैसे ही कुता नजदीक आया हाथी ने अपनी सूंढ से उसे अपने सिर पर बीठा दिया । कुता भी काफी खुश था अपने दोस्त के मिल जाने से । ये द्रश्य देखकर राजा भी बहोत ही खुश हुए, क्योकि उनका हाथी अब पहले की तरह खुश था । राजाने मंत्रीजी के इस काम की खुब सराहना की और उसे यथाउचित्त पुरस्कार दिया । अब हाथी फिर से अपने प्यारे से दोस्त कुत्ते के साथे खुश खुशाल जिन्दगी बिताने लगा था ।

सीख:

इस कहांनी से हमे यह सीख मिलती है की, जीवन मे दोस्ती की अहमियत कितनी होती है । नेचरल एनिमिझ होने के बावजुद भी, जानवरो मे भी दोस्ती होती है । दोस्ती मे रूप-रंग, उच-नीच कुछ नहीं होता ।

टी. वेंकटा रत्नय्या
लेखापरीक्षक

बिना मुकाम के काम कैसा

कुछ करना है तो डटकर चल,
थोड़ा दुनियां से हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते हैं,
कभी इतिहास को पलटकर चल।
बिना मुकाम के काम कैसा?

बिना मेहनत के दाम कैसा,
जब तक ना हासिल हो मंजिल,
तो राह में आराम कैसा?
अर्जुन सा निशाना रख,
मन में, ना कोई बहाना रख।

लक्ष्य सामने है, बस उसी पे अपना ठिकाना रख।
सोच मत, साकार कर।
अपने कमी से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।

किसी और का इंतजार ना कर।
जो चले थे अकेले उनके पीछे आज मेले हैं......
जो करते रहे इंतजार उनकी,
ज़िन्दगी में आज भी झमेले हैं।

एम. मनु
लेखापरीक्षक

मुखियाजी के ग्रेजुएट बहु

चहुँओर मंगलमय वातावरण था, कुछ महिलाएं तो मंगलगान में व्यस्त थी वहीँ कुछ बैना-पिहानी बांटकर घर वापस लौटी थी और बैठकर नवेली बहु के गुण-संस्कार का बखान कर रही थी। हो भी क्यूँ ना आखिर आज गाँव के मुखियाजी के पोत-पुतोहू के ससुराल आगमन पश्चात रसोई स्पर्श का प्रथम दिवस जो था। वस्तुतः आज के भोजन का जायका भी तो नयकी दुल्हिन के अनुसार ही होगा, जिसमें वो अपनी पाक कला की दक्षता और विवाह पूर्व अर्जित खान-पान की समझ को भी ससुरालवालों के सामने प्रदर्शित कर अपने नैहर को गर्व भी महसूस करवा पायेगी।

मुखियाजी का परिवार चार पुत्र एवं पुत्र-वधुओं समेत कुल 27लोगों से भरा-पूरा परिवार था। घर की सम्पन्नता और संयुक्त परिवार के आयाम की चर्चा आस-पास के 20-25 गाँवों में लोगों की जुबान से निकल ही पड़ती थी। सभी स्वजन मुखियाजी को शुभकामनाएँ दे रहे थे, कि अरे आप जैसा सौभाग्य भगवान सबको दें, पोता का बियाह तो देखिये लिए अगर प्रभु की मरजी रही तो स्वर्गारोहण से पाहिले पड़पोता को गोद में जरुरे खिलायेगा।

काफी गुना भाग और काट-छांट के बाद पोते की शादी तय हुई। वधु के चुनाव में यह ध्यान रखा गया किकनियाँ सुन्दर हो न हो लेकिन पढ़ी लिखी और शहर के आहार व्यव्हार से परिचित जरूर होनी चाहिए। चूंकि लड़का स्नातक था और नौकरी के सिलसिले में अगर शहर जाना भी पड़ा तो अच्छी जीवनसंगिनी बन सके। अंततः एक कन्या का चुनाव हुआ और गाँव में कहलवाया गया कि मुखियाजी गाँव में पहली बार सुन्दरता से ऊपर शिक्षा को रखकर बहु ला रहे हैं।

शाम हुई तो बहु घूंघट काढ़कर एक कॉपी पर ससुराल के सभी सदस्यों का नाम लिखकर कौन कितनी चपाती खाएँगे, पूछना शुरू की। मुखिया जी का फरमान जारी हुआ कि सबलोग जल्दी-जल्दी अपनी खुराकी बता दो जिससे कि कनियाँ को राशन आँकने में परेशानी का सामना न करना पड़े। कुछ तो दबी जुबान में यह भी कह रहे थे, ये कौन सी बला है, ऐसा भी कहीं हुआ है क्या? लेकिन सब बहु के इस गुण की चर्चा करने से बचते नजर आये। “अरे भाई पढ़ी-लिखी की बात ही कुछ और होती है”।

सभी सदस्यों की खुराकी का आंकलन तो हो गया, तदनुसार प्रति व्यक्ति के हिसाब से आटा, सब्जी, मसाले, इत्यादि का वजन तैयार हुआ और सम्बंधित नौकरानियों को नाप जोखकर सामान दे दिया गया। एक नौकरानी को आटा गूंथने का, दूसरी को सब्जी काटने, तीसरी को दूध गर्म करने और पायस सामग्री तैयार करने की तथा चौथी को चूल्हे के पास पर्याप्त जलावन, पानी और बर्तन इकठ्ठा करने को तो किसी को सिलबट्टे पर मसाला पीसने को कहा गया।

रसोई बनना प्रारंभ हुआ। कुछ समय पश्चात पकते व्यंजनों की सुगंध प्रांगण में फैलने लगी। सभी लोग संध्याकाल की नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर दालान पर बैठकर गप्प हांकने के साथ ही अपनी बढ़ी हुई पेट पर हाथ फेरकर भूखा होने का सन्देश प्रेषित करने लगे। वहीँ घर की महिलाएं पकवान के इंतजार में बहु का गुण-गान किये जा रही थी और खुश भी हो रही थी कि आज किसी और की हाथ का भोजन ग्रहण करने का आनंद मिलेगा। “ग्रामीण परम्परा के अनुसार भोजन का भोग सर्वप्रथम बच्चे और पुरुषों के बाद बुजुर्ग महिलाएं और अंत में ननद भौजाईके खाने की रही है”।

समयानुसार नाना प्रकार का व्यंजन तैयार होने के सन्देश के साथ आमंत्रण भी दालान पर बैठे घर के तथा आमंत्रित पुरुषों को भिजवाया गया। दालान पर ही सभी पुरुष अपने-अपने लोटा में पानी में लेकर पालथी मारकर बैठ गए। केले के पत्ते पर पानी छिड़का गया और नाना प्रकार के व्यंजन परोसे गए। सभी ने भगवान को सुमिरते हुए भोजन आरम्भ किया। बुढिया सासु माँ और मुखियाजी घूम-घूमकर स्वाद का अंदाज पूछते और इतराते। “कहिये कैसा भोजन बना है, नमक-उमक सब ठीक तो है ना”!

भोजन स्वादिष्ट बने होने से सब छककर खाते रहे और साथ ही पौत्र-वधु को पुत्रवती, धनवती, सौभाग्यवती आदि होने का आशीर्वाद बरसाते जा रहे थे। “मजा आ गया क्या भोजन बना है”! जैसी बातों से भोजन के स्वाद को और बढ़ाये जा रहे थे। पहली पंघत उठने के बाद बहु रसोई घर में जाकर खर्च और बचे हुए व्यंजनों का हिसाब किताब करने लगी। पता चला कि साधारणतया कुछ व्यक्ति स्वभावगत अपने अनुमानित या यूँ कहें कि स्वाद के वशीभूत होकर कुछ ज्यादा ही खा गए जिसके कारण भोजन अनुपातिक रूप से कम बचा हुआ था

जिसमें बुजुर्ग महिलाओं और ननद भौजाई को खाना था। अपनी बारी आने तक भोजन समाप्त ना हो जाये ये सोचकर नई स्नातक बहु ने एक थाली में खुद के लिए सारा व्यंजन परोसकर रसोईघर में ही राखी कुर्सी पर बैठकर प्रारंभ कर दी। हा-हा ये क्या! बहु ने खाना शुरू कर दिया। कानों-कान खबर सासु माँ और ननद तक पहुँची, जिनको अपने घर की इज्जत को हमेशा पड़ोसियों से सर्वोपरि बताना रहता है, जग-हंसाई ना हो इसलिए भागे-भागे रसोईघर में बहु को देखने पहुँचे अरे! कनियाँ ये क्या कर रही हो? क्या हुआ अक्ल तो ठीक है ना! माँ ने कुछ सिखाया था कि नहीं। थोड़ी देर सब्र नहीं कर सकती थी? आदि-आदि कहकर ताना देने लगी। बहुत पूछने पर बहु ने बताया भूख तो उतनी नहीं लगी लेकिन सभी लोग जिस हिसाब से खाना खाए हैं वह पहले बताई गयी मात्रा से काफी ज्यादा है, इस प्रकार से तो हमारे खाने तक तो कुछ बचेगा ही नहीं, यही सोचकर मैंने अपना खाना खा लिया। बाकी लोग जाने कि आगे क्या करना है? इसमें आपलोग मुझे कोपभाजन का शिकार क्यूँ बना रहे हैं यह समझ से परे है। ऐसा बहु ने सासु माँ को बताया। इस बात की जग-हंसाई ना हो जाये, पतोहू को डांट रही थी कि थोड़ा पूछ तो लेती। दूसरी ओर इस बात की खबर पड़ोस में फैलने का भी डर था कि लोग क्या बोलेंगे। इतने दिनों की बनी-बनायी इज्जत का क्या होगा?

लघु परिवार की लड़की का संयुक्त परिवार की बहु बनने का सफर काफी अनमना सा रहा। वहीँ सम्भ्रांत परिवार के बहु का यह गुण यशस्वी परिवार की कीर्ति को धूमिल करने वाली और स्वार्थपरक कहकर ग्रामीण महिलाएं कंसार-घर की एक चौपाई सी बना डाली।

मुखियाजी के शहरी स्नातक पोत-पुतोहू के गुण-दोष का बखान जो भी हो परन्तु खाने की मात्रा के आंकलन के तरीके एवं संस्कृति से परे स्वयं के खाने का गुण ने तो सभी महिलाओं के होंठ पट-पटाने का एक स्वर्णिम अवसर जरूर दे गया।

राम राघव
लेखा परीक्षक

"मोतियों का शहर"

भारत का सबसे युवा राज्य तेलंगाना भारत में दक्षिण और उत्तर की दो संस्कृतियों का मिश्रण है। तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद देश के सबसे अधिक आबादी वाले शहरों में से एक है और यहाँ बहुसांस्कृतिक समाजों का घर है। हैदराबाद शहर को **"मोतियों के शहर"** के रूप में जाना जाता है और आसफ जाही वंश द्वारा शासित होने के कारण इसे **"निज़ामों का शहर"** कहा जाता है ।

शाही इतिहास का प्रभाव हैदराबाद की संस्कृति और परंपराओं में झलकता है। यह अपने गंगा-जमुनी तहजीब के लिए भी जाना जाता है और हैदराबाद को लघु भारत के रूप में जाना जाता है। हैदराबाद शहर में हिंदू और मुस्लिम दोनों संस्कृतियों का मिश्रण है जिसे हैदराबाद के भोजन, जीवन शैली, वास्तुकला और भाषा में भी देखा जा सकता है।

यहां उत्तर और दक्षिण भारतीय भाषाओं, संस्कृतियों और धर्मों का मिश्रण है, जिसके बाद से **हिंदू और मुस्लिम परंपराओं का सह-अस्तित्व** हो गया, जिसके लिए यह शहर विख्यात है । धर्मों के मिश्रण के फलस्वरूप हैदराबाद मे कई त्योहार मनाएं जातें है जैसे **गणेश चतुर्थी,दीवाली,बोनालू, बतुकम्म और ईद-उल-फितर** सभी धूम धाम से मनाया जाता है । **बोनालू** एक हिंदू त्योहार है, जो जून/जुलाई के दौरान मनाया जाता है, जहां देवी मां काली की पूजा की जाती है। त्योहार को भक्तों की इच्छाओं को पूरा करने के लिए देवी को धन्यवाद देने के लिए माना जाता है। **बतुकम्म** तेलंगाना की सांस्कृतिक भावना का प्रतिनिधित्व करता है। **बतुकम्म** एक सुंदर फूलों का ढेर है, जिसे मंदिर के गोपुरम के आकार में सात संकेंद्रित परतों में विभिन्न अद्‌वितीय मौसमी फूलों से सजाया गया है, जिनमें से अधिकांश औषधीय गुणों वाले हैं। तेलुगु

में," **बतुकम्म"** का अर्थ है 'जीवित माँ देवी' और देवी महागौरी-'जीवन देने वाली' है । रमजान मुसलमानों का प्रमुख त्योहार है और तेलंगाना में मोहर्रम भी बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। हैदराबाद में साहित्य और ललित कलाओं की समृद्ध परंपरा है।

शहर में कई पुराने ऐतिहासिक स्मारक, मस्जिदें, चारमीनार, मक्का मस्जिद, गोलकोंडा किला, चारकमान, उस्मानिया विश्वविद्यालय और हैदराबाद उच्च न्यायालय आदि हैं, जो शहर की उल्लेखनीय इमारतें हैं, जो कुतुब शाही और मुगल वास्तुकला शैलियों को दर्शाती हैं। हैदराबाद में चारमीनार के पास लाड बाजार, सुन्दर चूड़ियाँ ख़रीदने के लिए एक प्रसिद स्थान है। यह चूड़ियों और मोतियों का एक प्रसिद्ध स्थानीय बाजार है। लाड बाजार निजामों के समय का था।

हैदराबाद का भोजन दुनिया भर में मशहूर है, मुगल, नवाबी और आंध्र के व्यंजनों का मिश्रण, यह अपने स्वादिष्ट स्वाद के लिए जाना जाता है। हैदराबादी बिरयानी और हैदराबादी हलीम हैदराबाद के सबसे मशहूर व्यंजन हैं।

इस प्रकार, हैदराबाद एक समृद्ध विरासत और विविध संस्कृति के साथ भारत के सबसे जीवंत शहरों में से एक है।

बी.ब्रिजिता

कनिष्ठ अनुवाद

"माँ, हाँ मैं एक लड़की हूँ"

यूँ तो मेरा मुझमें कुछ नहीं, चाहो तो बाँटकर देख लो, मेरे हर हिस्से में छाप किसी और की मिलेगी।

माँ, तुमने मुझे जन्म दिया, काश थोड़ी मिठास भी दी होती,
पैदा होते ही एक ऐसे समाज में छोड़ दिया,
जहाँ मेरा अस्तित्व बस एक लड़की बनकर रह गया।

यूँ तो कहने को मैं पांच भाई बहनों के बीच थी,
लेकिन सबसे ज्यादा प्यार तो तुमने ही दिया।
हर पल मुझे तेरी फिक्र सताती थी,

मेरे हर एक जिद्द के लिए पापा से तेरी लड़ाई मुझे डराती थी।
फिर तू मेरे पास आती थी, और प्यार से मुझे थपथपाकर,
एक बार फिर याद दिला जाती थी, कि मैं एक लड़की हूँ।

याद है, मेरे स्कूल का वो पहला दिन,
मैं कितना रोयी थी, पूरे दिन तेरी याद सतायी थी,
और लौटते ही जब तुमने मुझे पहली झपकी लगाई थी,
एक पल में ही दुनिया की सारी खुशियाँ मेरी झोली में समायी थी।

आज मैं बड़ी हो गई हूँ, दुनिया को करीब से देखा तो जाना,
माँ, तुमने झूठ को सच और सच को झूठ बता कर रखा, पर दोष तुम्हें भी क्यों दूँ, आखिर तुमने भी तो मुझे खुशियां ही देनी चाही।

अनामिका पटेल
लेखा परीक्षक

हुब्बल्ली: श्री सिद्धरूढ़ा मठ

हुब्बल्ली श्री सिद्धरूढ़ा स्वामीजी एक महान चमत्कारिक व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने सरल जीवन और शिक्षाओं के कारण बहुत बड़ा अनुसरण किया। मठ में नियमित रूप से धार्मिक कार्यक्रम होते हैं। श्री सिद्धरूढ़ा के दर्शन के लिए देश-विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने मठ का दौरा किया और श्री सिदधरूढा का आशीर्वाद लिया।

हुब्बल्ली: जैसे ही आप हुब्बल्ली कहते हैं, आपको श्री सिद्धरूढ़ा मठ की याद आ जाती है। श्री सिद्धरूढ़ा स्वामीजी ने अपने अद्वैत दर्शन के माध्यम से भक्तों को धर्म का मार्ग उपदेश दिया। श्री सिद्धरूढ़ा का सिंहासन आज भी जागरूकता का केंद्र है। इसलिए जो भी हुब्बल्ली आता है वह सबसे पहले श्री सिद्धरूढ़ा मठ जाता है और गद्दूगे के दर्शन करता है। मठ में हर दिन कोई न कोई धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

श्री सिद्धरूढ़ा स्वामीजी मूल रूप से बीदर जिले के चलकापुरा के रहने वाले थे। उनका जन्म **26 मार्च, 1836** को हुआ था। उन्होंने कम उम्र में ही घर छोड़ दिया और दुनिया की यात्रा की। वह **1877** में **41** साल की उम्र में हुब्बल्ली चले गए। उन्होंने लोगों की आध्यात्मिक चुनौतियों को सुना। उन्होंने उन लोगों के दुखों को दूर किया जो विश्वास करते थे और उनके जीवन को उज्ज्वल करते थे। उन्होंने लोगों को पंचाक्षरी मंत्र का खुलकर जाप करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, ओम नमः शिवाय मंत्र चौबीस घंटे मठ में गूंजता है।

<u>गांधीजी और तिलक की पसंद पर मठ का प्रभाव:</u>

श्री सिद्धरूढ़ा स्वामीजी अपने अनुष्ठानों और आचरण से भक्तों के लिए शिव के अवतार थे। गडग के मदिवलप्पा, नवलगुंड के नागलिंग स्वामीजी, संत शिशुनाला शरीफ, लोकमान्य तिलक और गांधीजी जैसे महात्मा श्री सिद्धरूढ़ा से प्रभावित थे। श्री सिद्धरूढ़ा की शिक्षा का सार यह था कि जब तक शरीर का अस्तित्व है, व्यक्ति को सभी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए और मुक्त हो जाना चाहिए। **21 अगस्त, 1929** को श्री सिद्धरूढ़ा ने अपना शरीर त्याग दिया। तब से, श्री सिद्धरूढ़ा की गद्दी भक्तों के प्रसा द का केंद्र रही है। बेदी आने वाले भक्तों को इस बात से निराशा नहीं हुई है कि वे श्री सिद्धरूढ़ा हैं। इसलिए, हर साल एक भव्य रथ उत्सव आयोजित किया जाता है। जल उत्सव आंखों का ध्यान आकर्षित करता है। श्री सिद्धरूढ़ा की उपस्थिति में जाति या पंथ का कोई भेद नहीं है। कोई श्रेष्ठता या हीनता नहीं है। मठ में सभी जाति, धर्म और वर्ग के लोग आते हैं। वह सीधे श्री सिद्धरूढ़ा की गर्दन को छूता है और झुकता है।

मठ का प्रशासन:

धारवाड़ जिले के प्रधान न्यायाधीश श्री सिद्धरूढ़ा मठ के प्रशासनिक अधिकारी हैं। न्यायाधीश उसे सलाह देने के लिए एक ट्रस्ट समिति नियुक्त करता है। 17 निदेशक पांच साल में एक बार चुने जाते हैं। मठ में सभी जातियों और धर्मों के लोग हैं। मठ के विकास से संबंधित सभी निर्णयों पर चर्चा की जाती है र सौहार्दपूर्ण ढंग से लिया जाता है। मठ में आने वाले भक्तों के लिए कोई अन्नदासोहा और आवास नहीं है।

श्री सिद्धरूढ़ा मठ में आयोजित श्रावण के महीने में जल रथ उत्सव के उत्सव को देखने के लिए दो आंखें पर्याप्त नहीं हैं। श्री सिद्धरूढ़ा स्वामी की मूर्ति को एक सजाए गए बेड़ा पर रखा जाता है और एक जल रथ किया जाता है। मठ के परिसर में पुष्करिणी में आयोजित जल रथोत्सव को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग आए हैं। रंग-बिरंगे फूलों और फलों से सजी एक बेड़ा पानी में परिक्रमा करती है। लोग भगवान शिव के नाम को याद करते हैं और जल रथ को देखते हैं।कार्तिका माह में लक्षदीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। शिवरात्रि, जात्रा महोत्सव और रथोत्सव हर साल आयोजित किए जाते हैं। सबसे पहले, सिद्धरूधा और गुरुनाथ रुधा की पालकी जुलूस आयोजित की जाती है। भक्त शहर की विभिन्न सड़कों से गुजरने वाली पालकी को फूल और फल चढ़ाते हैं और भक्ति के साथ इसकी पूजा करते हैं। भक्तों के दरवाजे तक जाने वाली पालकी शाम को मठ परिसर में पहुंचती है। रथ मठ के कैलाश मंडपम के परिसर से महाद्वारा तक खींचा जाता है। बारात में आने वाले भक्त रथ खींचकर शुद्ध हो जाते हैं। रंग-बिरंगे फूलों से सजाया गया रथ शाही सड़क पर खींचा जाता है।

रथोत्सव के लिए आने वाले भक्त नारे लगाते हैं। वे रथ पर नारियल, केले और नींबू फेंकते हैं और तर्पण करते हैं। भक्तों का मानना है कि रथ के कलश को फलों से मारने से मुश्किलें दूर होंगी और सही रास्ता मिलेगा। इसलिए, लाखों भक्त मठ में आते हैं और रथोत्सव में भाग लेते हैं। श्री सिद्धरूढ़ा ने उन भक्तों को कभी नहीं छोड़ा जिन पर वे विश्वास करते थे। इसी वजह से मठ में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या भी हर साल बढ़ रही है।

ओम नमः शिवाय, हर हर महादेव

प्रिया बी.एन.
(आउटसोर्स स्टाफ)

आगामी

सुकांत भट्टाचार्य

मैं जड़ नहीं, मृत नहीं, अंधेरे का खनिज भी नहीं

मैं तो हूँ एक जीवंत प्राण

एक अंकुरित बीज हूँ मैं

मिट्टी मे पला, भयभीत

आकाश की पुकार पर आज ही

मैंने अपनी संशय भरी आँखें खोली हैं,

सपनों से घिरा हुआ हूँ मैं।

भले ही नगण्य हूँ, तुच्छ हूँ वटवृक्षों के समाज में

फिर भी इस छोटी-सी देह में

मर्मर ध्वनि बजती है,

धरती को फोड़

मैंने उजाले का आना-जाना देखा है,

इसीलिए मेरी जड़ों में है अरण्य की विराट चेतना।

आज सिर्फ़ अंकुरित हूँ

जानता हूँ कल छोटी-छोटी पत्तियाँ

उद्दाम हवा के ताल पर अपने सिर हिलाएँगी

फिर दीप्त टहनियाँ पसार दूँगा सबके सामने,

खिलाऊँगा विस्मय के फूल

पड़ोसी पेड़ो के चेहरों पर।

तेज़ तूफ़ान में भी मज़बूत हैं मेरी जड़ें
जानता हूँ मेरी टहनियों की बाधा से
तूफ़ान थमेगा ही,
जानता हूँ
मेरे अंकुरित साथी मेरे आह्वान पर
नए अरण्य के गीत में मुखरित होंगे,
अगले वसंत में जानना
मैं भी शामिल हो जाऊँगा बड़ों की जमात में
पत्तों की जयध्वनि प्रकट करेंगे सभी,
छोटा हूँ लेकिन तुच्छ नहीं–
मुझे पता है–मैं भावी वनस्पति हूँ
बारिश में, मिट्टी के रस मुझे यही सम्मति मिलती है,
उस दिन छाया में आकर
यदि वार करोगे कुल्हाड़ी का
तो भी मैं तुम्हें हाथ के इशारे से पुकारूँगा
फल दूँगा, फूल दूँगा, पक्षियों का कलरव भी दूँगा
एक ही मिट्टी में पला-बढ़ा
मैं तुम्हारा ही रिश्तेदार हूँ।

(संग्रहित)

पंपा बिस्वास
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

पुस्तकें: समय की सीमाओं से परे एक यात्रा

पुस्तकें हमारे जीवन में एक ऐसा माध्यम हैं, जो हमें समय की सीमाओं को पार करने का अवसर देती हैं। ये हमें इतिहास के पन्नों में ले जाती हैं, भविष्य के संभावित परिदृश्यों को दिखाती हैं और हमें एक ऐसी दुनिया से रूबरू कराती हैं जो हमारे आसपास होते हुए भी अदृश्य रहती है। किताबें किसी विज्ञान कथा के काल्पनिक समय यंत्र से कम नहीं हैं; ये हमें समय, संस्कृति और भावनाओं के माध्यम से अद्वितीय यात्राओं पर ले जाती हैं।

मृत लेखक की जीवंत आवाज़: जब लेखक अमर हो जाते हैं

सबसे दिलचस्प बात यह है कि पुस्तकों के माध्यम से हम उन लेखकों से संवाद कर सकते हैं, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। जैसे ही हम किसी पुस्तक के पन्ने खोलते हैं, ऐसा लगता है कि लेखक अपने विचार, भावनाएँ और दर्शन हमारे साथ साझा कर रहे हैं। चाहे वह शेक्सपियर हों, प्रेमचंद हों या फिर प्लेटो, उनके शब्दों में आज भी वही गहराई और जीवन है, जो उन्होंने लिखते समय अनुभव की होगी।

मृत लेखक भी अपनी रचनाओं के माध्यम से हमारे साथ बात करते हैं। उनके विचार और ज्ञान अमर हो जाते हैं, और जब भी हम उनकी रचनाओं को पढ़ते हैं, हम उनके मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं, उनके जीवन और अनुभवों को महसूस करते हैं। यह एक अनोखा अनुभव है–एक प्रकार का संवाद, जो समय और स्थान से परे है।

अतीत की यात्रा: इतिहास के साक्षी

जब हम ऐतिहासिक ग्रंथों या उस समय के साहित्य को पढ़ते हैं, तो हम सीधे उस युग में प्रवेश कर जाते हैं। चाहे वह महाभारत का काल हो या मीराबाई के भजनों का युग, पुस्तकें हमें उस समय की धड़कन महसूस कराती हैं। इतिहास के घटनाक्रमों को पढ़ते समय हम केवल तथ्यों को नहीं जानते, बल्कि उन घटनाओं को महसूस करते हैं, जैसे कि हम स्वयं वहाँ उपस्थित हों।

द लाइफ ऑफ एनी फ्रैंक जैसी पुस्तकें हमें व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से अतीत की गहराइयों में ले जाती हैं। हम इतिहास के पलों का साक्षात्कार करते हैं, त्रासदी और मानवीय दृढ़ता की गाथाएँ महसूस करते हैं, और यह अनुभव हमें अतीत के संघर्षों और आज के जीवन के बीच एक कड़ी प्रदान करता है।

भविष्य की कल्पना: संभावनाओं की दुनिया

पुस्तकें केवल अतीत तक सीमित नहीं होतीं; वे हमें भविष्य की संभावनाओं में भी झांकने का अवसर देती हैं। विज्ञान कथा लेखक जैसे एच.जी. वेल्स, इसाक असिमोव, और मार्गरेट एटवुड ने अपने साहित्य के माध्यम से उन संभावित दुनियाओं का चित्रण किया है, जिनका सामना मानवता को भविष्य में करना पड़ सकता है।

चाहे वह एक आदर्शवादी भविष्य हो या एक चेतावनी देने वाला डिस्टोपियन परिदृश्य, इन लेखकों की कहानियाँ हमें उन नैतिक और वैज्ञानिक चुनौतियों के बारे में सोचने पर मजबूर करती हैं, जिनका सामना आने वाली पीढ़ियाँ कर सकती हैं।

वर्तमान को नई दृष्टि से देखना: समानांतर दुनिया

पुस्तकें हमें न केवल अतीत और भविष्य में ले जाती हैं, बल्कि हमें वर्तमान को एक नई दृष्टि से देखने का अवसर भी देती हैं। जब हम विभिन्न पात्रों और उनके जीवन के माध्यम से दुनिया को देखते हैं, तो हमें उन भावनाओं, संघर्षों और संस्कृतियों की समझ मिलती है, जो शायद हमारे अपने अनुभवों से अलग हों।

जॉन स्टीनबेक की *द ग्रेप्स ऑफ रैथ* या खालिद हुसैनी की *द काइट रनर* जैसी किताबें हमें आज की दुनिया में मौजूद संघर्षों को गहराई से समझने का मौका देती हैं। ये कहानियाँ हमें यह सिखाती हैं कि हमारी दुनिया में कितनी विविधता और जटिलता है, और कैसे साहित्य उस जटिलता को उजागर कर सकता है।

अमर विषय: मानवीय अनुभव की सार्वभौमिकता

पुस्तकें हमें केवल एक विशेष समय या स्थान की जानकारी नहीं देतीं; वे हमें मानवीय अनुभव की सार्वभौमिकता से जोड़ती हैं। प्रेम, पीड़ा, महत्वाकांक्षा, विश्वासघात और आशा जैसे विषय सदियों से साहित्य में प्रस्तुत किए गए हैं, और ये आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

क्लासिक साहित्य, जैसे *महाभारत, शेक्सपियर* या *प्राइड एंड प्रेजुडिस,* हमें यह एहसास दिलाते हैं कि चाहे युग बदल जाए, मानव अनुभवों की गहराई वैसी ही बनी रहती है। ये पुस्तकें हमें उन बुनियादी भावनाओं और संघर्षों से रूबरू कराती हैं, जो हर पीढ़ी के लिए प्रासंगिक होती हैं।

निष्कर्ष: पन्नों में छिपी अनंत यात्राएँ

जबकि भौतिक रूप से समय यात्रा का आविष्कार होना बाकी है, पुस्तकें हमें समय की सीमाओं को पार करने का अवसर देती हैं। वे हमें अतीत में ले जाती हैं, भविष्य की झलक दिखाती हैं, और वर्तमान को नई आँखों से देखने का मौका देती हैं। जब हम एक पुस्तक पढ़ते

हैं, तो हम एक ऐसी यात्रा पर निकलते हैं, जो न केवल हमें ज्ञान देती है, बल्कि हमारे भीतर की समझ को भी गहरा करती है।

पुस्तकें वास्तव में समय यात्रा की मशीनें हैं–ज्ञान, कल्पना और अनुभव की दुनिया में प्रवेश के द्वार। चाहे वे हमें सदियों पीछे ले जाएं या सदियों आगे, पुस्तकों के माध्यम से लेखक हमें यह सिखाते हैं कि जबकि समय लगातार आगे बढ़ता रहता है, कहानियाँ और विचार हमेशा जीवित रहते हैं।

राजेश कुमार

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

डिजिटल परिवर्तन

डिजिटल परिवर्तन को अपनाना: हमारे कार्यालय का भविष्य

आज की तेज़-रफ़्तार दुनिया में "डिजिटल परिवर्तन" एक चर्चित शब्द बन गया है। लेकिन इस चर्चा से परे, यह एक सतत यात्रा का प्रतीक है जो संगठनों के संचालन, प्रबंधन, और सेवाओं की डिलीवरी को प्रभावित करती है। हमारा कार्यालय हमेशा बदलते समय के साथ तालमेल बिठाने में गर्व महसूस करता है, और हाल के वर्षों में हमने इस परिवर्तन को अपनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

डिजिटलीकरण की दिशा में यात्रा

हमारी डिजिटल यात्रा का पहला कदम IDEA सॉफ़्टवेयर का परिचय था, जिसने हमारे डेटा प्रसंस्करण और विश्लेषण के तरीके को बदल दिया। हाल ही में, आईएस विंग, नई दिल्ली के निदेशक द्वारा सुझाए गए सॉफ़्टवेयर अपडेट्स ने सुनिश्चित किया है कि हम डेटा प्रबंधन और ऑडिटिंग क्षमताओं के मोर्चे पर सबसे आगे रहें। IDEA लाइसेंस ने हमें बड़ी मात्रा में डेटा को प्रभावी ढंग से संभालने में सक्षम बनाया है, जिससे हमारी उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

यह केवल एक उदाहरण है कि कैसे हम डिजिटल रूप से समझदार कार्यस्थल की ओर बढ़ रहे हैं। एक और प्रमुख विकास फायरबेस के हमारे सिस्टम में एकीकरण के रूप में हुआ है, जिसने वास्तविक समय में डेटा अपडेट और टीमों के बीच बेहतर सहयोग को सक्षम किया है।

आगे क्या: भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयारी

क्षमता निर्माण पर बढ़ते ध्यान के साथ, हमारे इन-हाउस प्रशिक्षण कार्यक्रम कर्मचारियों को नवीनतम तकनीकों में प्रशिक्षित करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही में भर्ती किए गए DRAAOs (CGLE 2022 के माध्यम से) के लिए आयोजित सत्र उन्हें आधुनिक चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने में सहायक रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, अगस्त 2024 में आयोजित होने वाले भारत में डिजिटल गवर्नेंस पर अखिल भारतीय संगोष्ठी डिजिटल उपकरणों के उपयोग पर चर्चा के लिए एक मंच प्रदान करेगी, जिससे भारत में शासन को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। यह हमारे कार्यालय के लिए इस भविष्य-निर्माण प्रक्रिया में भाग लेने और योगदान देने का एक रोमांचक अवसर है।

दैनिक संचालन पर प्रभाव

इस परिवर्तन के हिस्से के रूप में, कई मैनुअल प्रक्रियाओं को स्वचालित किया गया है, और हमारे कर्मचारी इन उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए अनुकूल हो गए हैं। वर्कफ़्लो प्रबंधन, दस्तावेज़ स्थिति को ट्रैक करने, और विभिन्न विभागों के साथ सहयोग करने की क्षमता एक महत्वपूर्ण लाभ रही है। आगे बढ़ते हुए, हम मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में और अधिक नवाचारों की उम्मीद करते हैं, जो हमें हमारे संचालन को और अधिक सुव्यवस्थित करने में मदद करेंगे।

भविष्य के लिए तैयार कार्यबल का निर्माण

अंततः, हमारे कार्यालय का डिजिटल परिवर्तन केवल सॉफ़्टवेयर को अपग्रेड करने और प्रक्रियाओं को स्वचालित करने तक सीमित नहीं है। यह सीखने और अनुकूलन की संस्कृति को बढ़ावा देने के बारे में है। कार्यालय का हर व्यक्ति इस यात्रा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे एक ऐसा भविष्य बनता है जहां हम अधिक कुशल, उत्तरदायी और नवाचारी होते हैं।

हम सब मिलकर एक ऐसा संगठन बना रहे हैं जो न केवल बदलाव का सामना करने के लिए तैयार है, बल्कि उसे सक्रिय रूप से आकार भी दे रहा है ।

राजकिरण पी

(आउटसोर्स स्टाफ)

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान महानिदेशक लेखापरीक्षा द.प.रे., हुब्बल्ली के द्वारा दीप प्रज्वलन

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान निदेशक लेखापरीक्षा द.प.रे., हुब्बल्ली के द्वारा दीप प्रज्वलन

वर्ष 2023 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए महाप्रबंधक दक्षिण पश्चिम रेलवे हुबली (नराकास) द्वारा निदेशक लेखापरिक्षा दक्षिण पश्चिम रेलवे को शील्ड/ट्रॉफी प्रदान करते हुए

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह -2024

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह -2024

हिंदी पखवाड़ा-2024 के दौरान आयोजित प्रतिस्पर्धा

हिंदी पखवाड़ा-2024 के दौरान आयोजित प्रतिस्पर्धा

हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2023 (पुरस्कार वितरण)

हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2023 (पुरस्कार वितरण)

हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2023 (पुरस्कार वितरण)

हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2023 (पुरस्कार वितरण)

हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2023 (पुरस्कार वितरण)

महानिदेशक लेखापरीक्षा
का कार्यालय
दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली
580023 (कर्नाटक)